मंथन

यूथ रूबरू का मासिक विचार पत्र

श्रीफल फाउंडेशन की प्रस्तुति

वर्ष : 06
अंक : 05
माह : मार्च 2021
मूल्य : निःशुल्क

> धर्म के साथ जीने वाले के लिए कुछ भी असाध्य नहीं।
>
> - अंतर्मुखी

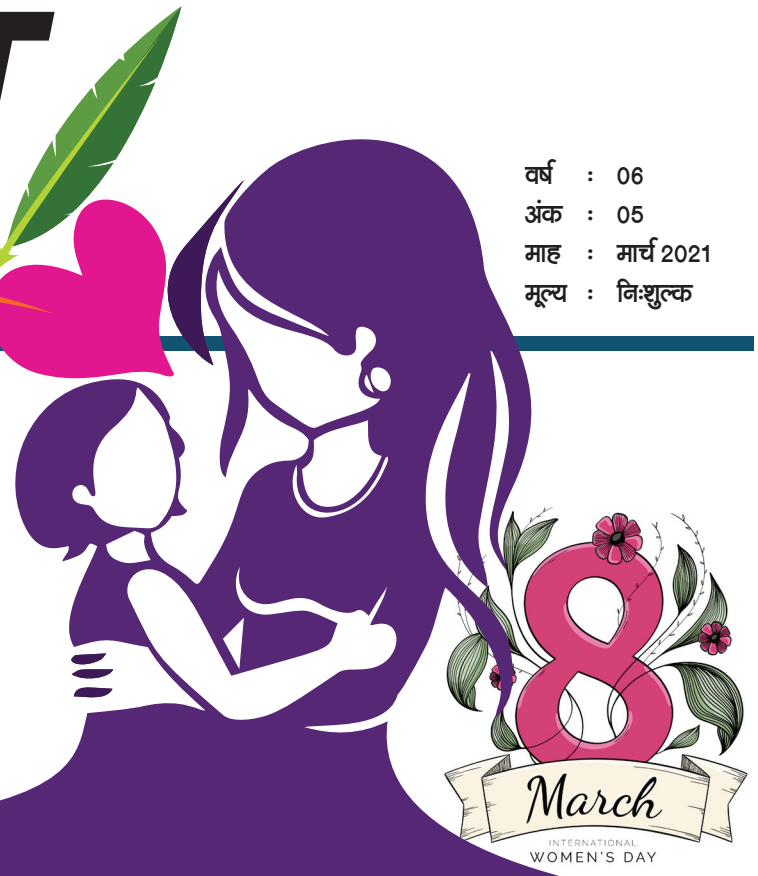

संपादकीय

आदि शक्ति स्त्री को हमारा नमन

स्त्री, यानी सृष्टि की वो रचना, जिसे प्रकृति ने संतति को जन्म दे कर इस संसार को चलाए रखने का गुरूतर दायित्व सौंपा है। स्त्री समाज और धर्म की आदि शक्ति है। सनातन संस्कृति में विद्या, धन और संहार का दायित्व देवियों को सौंपा गया है, वहीं जैन दर्शन तो हमेशा से ही स्त्री शक्ति को महत्व देता आया है। प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ ने अपनी पुत्रियों को शिक्षा दिला कर जैन दर्शन में उस संस्कार को परिचालित कर दिया था जो यह कहता है कि समाज में स्त्री और पुरूष में कोई भेद नहीं है। सृष्टि को चलाए रखने के लिए दोनों ही जरूरत है। भगवान आदिनाथ ने यह संदेश भी दिया कि स्त्री को तो समाज को संस्कारित और शिक्षित भी करना है। वैसे भी एक स्त्री दो कुल अपने पीहर और अपने सुसराल को शिक्षि व संस्कारित कर सकती है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर "मंथन" के इस बार के अंक में हमने जैन दर्शन और भारतीय संस्कृति में महिलाओ के महत्व को ही सामने लाने का प्रयास किया है। आचार्य श्री अनुभव सागर जी महाराज का विचारोत्तेजक आलेख महिलाओं के महत्व और आज की परिस्थिति को सामने लाते है। इसके साथ ही जैन धर्म में आर्यिका माताजी की सुदीर्घ परम्परा को नमन करते हुए प्रमुख आर्यिका माताजी के जीवन से परिचित करने का प्रयास भी किया गया है। इसके साथ ही आजादी के आंदोलन में जैन महिलाओं के योगदान और धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए काम करने वाली जैन महिलाओं के बारे में भी कुछ रोचक जानकारियां दी गई है। इसके अलावा काव्यमन में इस बार प्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत की महिलाओं को समर्पित कविता है, वहीं आचार्य शांति सागर जी महाराज के जीवन पर चल रहा धारावाहिक तो है ही। महिला दिवस विशेषांक है, इसलिए इस बार कुछ स्थाई स्तभ में हम नही दे पा रहे हैं।

आशा है महिला शक्ति को समर्पित "मंथन"का यह अंक आपको पसंद आएगा।

जय जिनेन्द्र

> "विश्व की समस्त विशालताओं में विशालतम है-परमात्मा, आसमां और महात्मा। किंतु ये शब्द संग्रह भी मां वर्ण के बिना अधूरे हैं, अपूर्ण हैं।

आचार्य अनुभव सागर महाराज

आलेख - प्रथम

समस्त विशालताओं में विशालतम है स्त्री

आचार्य भगवंत ने मां की ममता शब्द का प्रयोग करके मातृत्व गुण का महत्व बहुत ही सुंदर रूप में प्रस्तुत किया है। व्यवहार में भी ईश्वर को परमात्मा कहा जाता है, जिसका अंतिम वर्ण है मां। आकाश को आसमां कहा जाता है, जिसका अंतिम वर्ण है मां। संत को महात्मा कहा जाता है, जिसका अंतिम वर्ण है मां। विश्व की समस्त विशालताओं में विशालतम है-परमात्मा, आसमां और महात्मा। किंतु ये शब्द संग्रह भी मां वर्ण के बिना अधूरे हैं, अपूर्ण हैं।

प्रवचनसार ग्रंथ में श्रमणों के श्रद्धा पुरुष, अध्यात्म सरोवर के राजहंस आचार्य भगवंत श्री कुंदकुंद स्वामी ने अपनी पावन पीयूष देशना में उद्धृत किया है कि केवली प्रभु का रुकना, चलना, बैठना और दिव्य ध्वनि का खिरना स्वयं की इच्छा से नहीं होता, किंतु सहज ही होता है। उसकी सहजता, स्वभावता को स्पष्ट करते हुए आचार्य भगवंत अंतिम चरण में उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं कि जैसे स्त्रियों में मताचार स्वभाव से पाया जाता है, वैसे ही प्रभु पुरुषार्थ प्रयास नहीं करते।

इस अवसर्पिणी युग का प्रारंभ ही स्त्री शक्ति के विकास एवं महत्व की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधारशिला है। प्रभु श्री आदिनाथ ने अपने ग्रहस्थावस्था में भी भोगभूमि से कर्मभूमि में परिणत भरत क्षेत्र की आकुलित जनता को षटकर्म का उपदेश दे कर जीवन निर्वाह की कला से परिचित कराया। असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प। प्रभु ने स्त्री जाति के महत्व को इस युग में रेखांकित करते हुए मसि यानि लेखन विधा और विद्या, इन दो कलाओं का शिक्षण अपनी पुत्रियों ब्राम्ही और सुंदरी को ही दिया। स्त्री शिक्षा, स्त्री सशक्तीकरण का इससे ज्यादा सशक्त उदाहरण और दूसरा नहीं हो सकता।

जैनागम के अनुसार तीर्थंकर की पुत्रियां नहीं होतीं, परंतु युग के आदि में ही वृषभनाथ प्रभु की पुत्रियों ब्राम्ही और सुंदरी के जन्म से हम यही तात्पर्य निकाल सकते हैं कि पंचम युग में स्त्रियों के महत्व के रेखांकन के लिए ही उनका जन्म हुआ। उन्हें शिक्षा-विधा से समृद्ध करना स्त्री सशक्तीकरण का एक महत्वपूर्ण कदम रहा है। प्रभु वृषभनाथ से वर्धमान तक इसी तरह सभी तीर्थंकरों के शासनकाल में उनकी रानियों को सम्माननीय स्थान दिया गया। प्रभु राम ने तो मात्र अपनी सौतेली मां को आघात ना पहुंचे, इसलिए स्वयं ही वन गमन के कठिन निर्णय का वरण कर लिया था।

आदिपुराण एवं प्रतिष्ठा ग्रंथों के अनुसार प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा के अवसर पर लगभग सभी मांगलिक क्रियाओं का प्रारंभ सौभाग्यवती महिलाओं के पवित्र हाथों से ही संपन्न होता है।

जैन शासन अथवा यूं कहें कि मानव जीवन के अंकुरण, उसके विकास आदि सभी महत्वपूर्ण स्थानों पर महिला अथवा स्त्री की भूमिका को किसी भी परिप्रेक्ष्य में कम नहीं आंका गया है।

शब्द शास्त्र में स्त्री शब्द के अन्य कई पर्यायवाची शब्द कहे गए हैं, उदाहरण स्वरूप

- **उभयकुल वद्धिनी** : पुत्र तो मात्र एक ही कुल को गौरवान्वित करता है, जबकि स्त्री अपने आचरण, व्यवहार से माता-पिता को तो सम्मान दिलाती ही है, किंतु अपनी समन्वय शीलता, धैर्य एवं शील के संतुलन से ससुराल को भी मंदिर बना देती है।
- **दुहिता** : दो कुलों के हितों का निमित्त होने के कारण दुहिता सार्थक संज्ञा है।
- **महिला** : मही यानि दही को मथने पर शेष बचा पदार्थ, जिसे निर्विकृति कहा जाता है। अपने पर्याय के अभिमान से चूर पथभ्रष्ट पुरुष को महिला कभी मां, कभी बहन, कभी पत्नी, कभी मित्र बनकर राह पर लाती है।
- **अबला** : बला का अर्थ होता है परेशानी। अबला शब्द कहता है कि बला हो ही नहीं सकती। जो अपनी कला से परिवार को आंतरिक सुरक्षा का अहसास कराती है। पुरुष को मां और बहिन के रूप में वरद हस्त देकर उसकी बला को निर्बल बना देती है वह अबला है।
- **नारी** : अरि का अर्थ होता है शत्रु और उसके आगे लगा है ना, अर्थात यह शब्द ही कह रहा है, जो किसी भी रूप में शत्रु नहीं हो सकती वह नारी है। प्रत्येक रूप में वह रक्षक है, मित्र है। कहते हैं-पुत्र कुपुत्र हो सकता है, किंतु माता कुमाता नहीं होती।

अपसंस्कृति का पहला निशाना बनी महिला

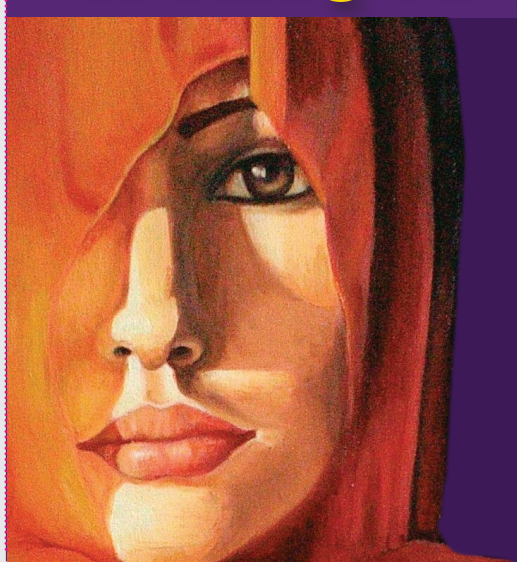

स्वभाव से सरलता से पदार्थों की ओर आकर्षित हो जाने वाली महिला इस अपसंस्कृति का सबसे पहला निशाना बन गई। शिक्षा का प्रचार-प्रसार तो भारत में पूर्व से था ही, किंतु महिलाओं ने आधुनिकता की अंधी दौड़ में अपने चारित्र के महत्व को विस्मृत कर दिया। गृहस्वामिनी का विशेषण उन्हें चुभने लगा और घर की चारदीवारों से बाहर का वातावरण उन्हें लुभाने लगा। घर की चारदीवारी से बाहर निकलना कदापि बुरा नहीं था, स्वतंत्रता कभी भी बुरी नहीं होती, बुरी होती है तो स्वच्छंदता। स्वतंत्रता कब स्वच्छंदता में परिवर्तित हो जाती है, पता नहीं नहीं चलता। अब इन्हें चरित्र से कॅरियर की चिंता है। घर की दीवारों को तो कैकयी ने भी लांघा था परंतु मर्यादा को नहीं लांघा कभी। दशरथ के रथ की सारथी बनकर युद्धभूमि पर विजयपताका फहराने का साधन बनी थी वह। मैना ने अपनी भक्ति भावना से सैकड़ों कोटियों को भयंकर वेदना से मुक्त करा दिया था। दशानन ने सीता का अपहरण तो कर लिया, मगर उसके शील के आगे उसे भी झुकना ही पड़ा।

परंतु इन सारी सतियों के जीवन पर नजर डालने पर एक बहुमूल्य बात सामने आती है कि स्त्री की सबसे बड़ी दुश्मन स्वयं स्त्री ही है। आज हमें मीडिया से ज्ञात हुआ है कि हर गर्भवती महिला और उसका संबंधी महिला परिवार चाहता है कि उनके यहां प्रथम संतान कन्या नहीं, बल्कि पुत्र ही हो। इससे अलग पुरुष चाहता है कि उसकी पहली संतान कन्या हो। तात्पर्य स्पष्ट है, गर्भपात का एक महत्वपूर्ण कारण है स्त्री का अपने कुल को रोशन करने वाले पुत्र की भावना रखना। जब स्त्री स्वयं ही स्त्री को नहीं चाहेगी तो स्त्री को कभी सम्मान प्राप्त नहीं हो सकता। मैं और मेरा की स्वार्थ भावना से ही रामायाण और महाभारत जैसे कथानक सम्मुख आते हैं। प्राणप्रिय राम भी कैकयी को अपने पुत्र प्रेम के आगे सामान्य लगने लगे।

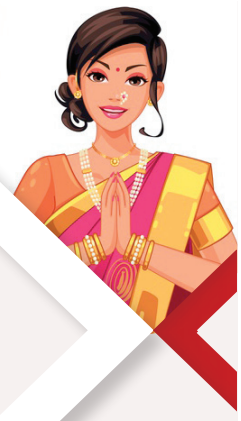

दिगम्बर जैन परम्परा में आर्यिका रत्नों की समृद्ध परम्परा

"दिगम्बर जैन परम्परा के साधु की चर्चा आते ही मन-मस्तिष्क में कठोर तपस्वी, त्यागमूर्ति, संसार की समस्त क्रियाओं से उदासीन संत की छवि उभरती है। पुरूष संतों के साथ ही जैन समाज में महिला संत यानी आर्यिकाएं भी हैं जो अपने ज्ञान और अपनी तपस्या से पूरे समाज का पथ प्रदर्शन कर रही हैं। जानते हैं इनके बारे में-

गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

'अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम' अर्थात् मैं तो कुछ भी नहीं हूँ, जो कुछ हो सो तुम्ही हो। मैं तो तुम्हारी शरण में हूँ।

जैसे रसों में इक्षुरस और नदियों में गंगा श्रेष्ठ है, वैसे ही कन्याओं में मैना श्रेष्ठ थी। जैसे पुष्पों में कमल और सुगंधित पदार्थों में चन्दन श्रेष्ठ है, वैसे ही क्षुल्लिकाओं में वीरमती श्रेष्ठ थीं। जैसे ताराओं में चन्द्रमा और वनों में नन्दनवन श्रेष्ठ है, वैसे ही ज्ञान और शील में आर्यिका ज्ञानमती श्रेष्ठ हैं। एक ही असाधारण व्यक्तित्व की मैना से वीरमती और वीरमती से ज्ञानमती तक की यह आध्यात्मिक यात्रा 20वीं-21वीं सदी के इतिहास की एक उल्लेख्य घटना है। उनकी चर्चा और चर्या को देख-सुनकर कौन मुग्ध नहीं होता है!

अवध प्रान्त के टिकैतनगर कस्बे में दिनाँक 22 अक्टूबर 1934 को सुश्रावक श्री छोटेलाल जी के घर में एक कन्यारत्न ने जन्म लिया। वह विक्रम संवत 1991 की शरदपूर्णिमा की रात्रि थी। इस दिन जन्मी इस बालिका को जब पूनों की चाँदनी ने नहलाया, तो इसके पीछे यही संकेत छिपा था कि यह बालिका बड़ी होकर सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश फैलायेगी और स्वयं महाव्रत अंगीकार कर सबको सुख-शीतलता प्रदान करेगी।

भारत में अधिकांश लोग बेटे के जन्म पर खुशियाँ और बेटी के जन्म पर मातम मनाते हैं। यह खोटी परिपाटी कब से और क्यों चल पड़ी, यह तो भगवान जाने, परन्तु इस बेटी ने अपनी बालसुलभ किलकारियों और सस्मित मुख-छवि से अपने घर-आँगन में खुशियों की जो चाँदनी बिखेरी, तो बेटों पर गर्व करने वाले भी ठगे से रह गये। इस परिवार में बेटे-बेटियों के साथ कभी भेदभाव नहीं किया गया। इस बच्ची का नाम रखा गया-मैना। मैना बचपन से ही पूर्व जन्म के संस्कारों के प्रभाव अपने साथ लेकर आई थी। मैना के मन में हितकर वार्ता को सीखने और समझने की उत्कट ललक थी। जिस चर्चा को कई-कई बार पढ़-सुनकर भी अन्य समवयस्क आत्मसात नहीं कर पाते थे, उसे वह एक-दो बार पढ़कर ही हृदयंगम कर लेती थी। प्रारंभिक शिक्षा यद्यपि उन्होंने किसी धार्मिक पाठशाला में प्राप्त की थी, किन्तु वह युग स्त्री-शिक्षा की उपेक्षा का युग था। कस्बे की अन्य कन्याओं की तरह मैना को भी आगे पढ़ाई जारी रखने से रोक लिया गया। उन्होंने घर पर ही पढ़ना जारी रखा। आठ वर्ष की उम्र से ही मैना अपनी माँ के साथ नियमित रूप से मंदिर जाने लगी थी। जब मैना ने दीक्षा ग्रहण कर ली, तो उन्हें पूज्य आचार्य श्री देशभूषण महाराज, आचार्यश्री शान्तिसागर महाराज एवं आचार्यश्री वीरसागर महाराज के उपदेश श्रवण और तत्त्वचर्चा का सौभाग्य मिलने लगा। वहाँ यथावसर वह स्वयं भी पढ़ती और गुरु-आज्ञा से संघस्थ सभी साधुओं और आर्यिकाओं को भी पढ़ाती। धीरे-धीरे चारों ही अनुयोगों के सभी उच्च कोटि के सिद्धान्त एवं आगम ग्रंथों का तलस्पर्शी पाण्डित्य माताजी ने प्राप्त कर लिया और आज पूरा विश्व उन्हेंगणिनी प्रमुख ज्ञानमती माताजी के नाम से जानता है। आज आयु के 80वें पायदान पर खड़ी मैना (सम्प्रति गणिनी आर्यिका ज्ञानमती) ने अपने बचपन के नाम की सार्थकता सिद्ध कर दी है। बचपन से आज तक माताजी का यही चिन्तन चलता रहा है-'अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम' अर्थात् मैं तो कुछ भी नहीं हूँ, जो कुछ हो सो तुम्ही हो। मैं तो तुम्हारी शरण में हूँ।

करती हैं तो लगता था साक्षात् सरस्वती के मुख से अमृत झर रहा है। आपके प्रवचन आगमानुकूल अकाट्य तर्कों के साथ प्रवाहित होते थे। आप घंटों एक ही आसन से धर्मचर्चा में निरत रहती थी। उच्च कोटि के विद्वान् भी अपनी शंकाओं को आपसे समीचीन समाधान पाकर सन्तुष्ट होते थे। सबसे बड़ी विशेषता तो आप में यह है कि आपसे कोई कितने ही प्रश्न कितनी ही बार करें आप उसका बराबर सही प्रामाणिक उत्तर देती थीं। स्वास्थ्य अधिकतर प्रतिकूल ही रहता था, लेकिन आप कभी अपनी चर्या में शिथिलता नहीं आने देतीं थीं। णमोकार मन्त्र के जाप्य, स्मरण में आपको प्रगाढ़ आस्था थी और आप हमेशा यही कहती थीं, कि इसके प्रभाव से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है। आसाम, बंगाल, बिहार, नागालैंड आदि प्रान्तों में अपूर्व धर्मप्रभावना कर जैनधर्म का उद्योत करने का श्रेय आपको ही है। महान् विद्यानुरागी, श्रेष्ठवक्ताय अनेक भाषाओं की ज्ञाता चतुरनुयोगमय जैन ग्रंथों की प्रकाण्ड विदुषी, न्याय, व्याकरण, सिद्धान्त साहित्य की कर्मज्ञा, ज्योतिष, यन्त्र, तन्त्र, मन्त्र, औषधि आदि की विशेष जानकार होने से आपने अनेकों जीवों का कल्याण किया है।

परमपूज्य चन्दनामती माताजी

धर्म से कोसों दूर रहने वाला युवा जो धर्म को पाखण्ड एवं ढकोसला कहता है, जब आपके सम्पर्क में आता है तो वह जान पाता है कि धर्म एक जीवन शैली है।

पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी ने कुमारी अवस्था में आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर एक अभिनव परम्परा का सूत्रपात किया। जिसके फलस्वरूप देश में आज शताधिक ऐसी आर्यिकायें हैं जिन्होंने गृहस्थाश्रम में प्रवेश के पूर्व ही संसार की असारता का ज्ञान प्राप्त कर आर्यिका के महाव्रतों को अंगीकार किया किन्तु इस परम्परा का सूत्रपात करने वाली गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रथम आर्यिका शिष्या होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ कु. माधुरी जैन को, जो आज प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी के रूप में अपनी ज्ञान रश्मियों से दिग्दिगन्त को आलोकित कर रही हैं।

आप आधुनिक जीवन शैली, उसकी मजबूरियों, आवश्यकताओं एवं युवा मानसिकता को करीब से जानने एवं समझने वाली एक साध्वी है। आप अपने सहज, सरल, सौम्य एवं मधुर व्यक्तित्व से सबके लिए पूज्यनीय हो गई हैं। गृहस्थाश्रम की बड़ी बहिन एवं जैन समाज की वरिष्ठतम साध्वी, आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को आपने 1969 में गुरु के रूप में स्वीकार कर त्यागध्अध्ययन की ओर कदम बढ़ाया। 1969 से आप सतत छाया के समान पूज्य माताजी के संघ में रहकर आगमों का गुरुमुख से अध्ययन तो कर ही रही हैं, साथ ही विगत 44 वर्षों से समर्पित होकर पूज्य गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी के संघ की र्निवकल्प सेवा आपकी अनन्य गुरु भक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। आगम ग्रन्थों तथा सम-सामयिक साहित्य के गहन अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों एवं स्वरचित भजनों, मुक्तकों से युक्त आपके प्रवचन व उद्बोधन युवा पीढ़ी को बरबस अपनी ओर आकर्षित करते हैं। आपके प्रवचन इतने सटीक, सुसंगत एवं क्रमबद्ध होते हैं कि प्रवचनोपरान्त प्रत्येक श्रोता के पास सोचने, विचारने एवं आचरण करने के लिए कुछ न कुछ सामग्री होती हैं। आपने कुछ अत्यन्त गम्भीर प्रकृति के कार्य किये हैं जिनमें सर्वोपरि है सिद्धान्त ग्रंथ षट्खण्डागम की गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी कृत सिद्धान्त चिन्तामणि शीर्षक संस्कृत टीका की हिन्दी टीका। धर्म से कोसों दूर रहने वाला युवा जो धर्म को पाखण्ड एवं ढकोसला कहता है, जब आपके सम्पर्क में आता है तो वह जान पाता है कि धर्म एक जीवन शैली है जिसे अपनाकर तनाव मुक्त जीवन जिया जा सकता है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री ने हमें जीवन जीने की कला सिखाई है जीवन को सार्थकता दी है।

परमपूज्य आर्यिका सुपार्श्वमती माताजी

णमोकार मन्त्र के जाप्य, स्मरण में आपको प्रगाढ़ आस्था थी और आप हमेशा यही कहती थीं, कि इसके प्रभाव से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है।

आपकी बहुजता, विद्या-व्यासंग, सूक्ष्म-तलस्पिशनी बुद्धि, अकाट्य तर्कणा शक्ति एवं हृदयग्राह्य प्रतिपादन शैली अद्भुत है और विद्वत्-संसार को भी विमुग्ध करने वाली है। राजस्थान के मरुस्थल नागौर जिले के अंतर्गत डेह से उत्तर की ओर सोलह मील पर मैनसर नाम के गांव में सहगृस्थ श्री हरक चंदजी चूड़ीवाल के घर विक्रम संवत 1985 मिती फाल्गुन शुक्ला नवमी के शुभ दिवस पर एक कन्यारत्न का जन्म हुआ-नाम रखा गया 'भंवरी'। भूरे-पूरे घर में भाई-बहिनों के साथ बालिका भी लालित-पालित हुई पर तब शायद ही कोई जानता होगा कि यह बालिका भविष्य में परम विदुषी आर्यिका के रूप में प्रगट होगी। अपनी 7-8 वर्ष की आयु में आपको महान् योगी तपस्वी साधुराज 108 आचार्यकल्प श्री चन्द्रसागर महारजा के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था जब वे डेह से लालगढ़, मैनसर पधारे थे। आचार्य श्री वीरसागरजी ने भंवरीबाई के वैराग्यभाव, अच्छी स्मरण शक्ति एवं स्वाध्याय की रुचि देखकर संघस्थ ब्रह्मचारी श्री राजमलजी (वर्तमान में आचार्य 108 श्री अजितसागरजी) को आज्ञा दी कि ब्रह्मचारिणी भंवरीबाई को संस्कृत, प्राकृत का अध्ययन कराये तथा अध्यात्म-ग्रंथों का स्वाध्याय कराये। विद्यागुरु का ही महान प्रताप है कि आप चारों ही अनुयोगों के साथ-साथ संस्कृत भाषा में भी परम निष्णात हो गईं। ज्यों-ज्यों आपका ज्ञान बढ़ने लगा उसका फल वैराग्यभाव भी प्रकट हुआ। विक्रम संवत 2014 भाद्रपद शुक्ला 6 भगवान सुपार्श्वनाथ के गर्भकल्याणक के दिन विशाल जनसमूह के मध्य द्वय आचार्य संघों की उपस्थिति में (आचार्य 108 श्री महावीरकीर्ति जी महाराज भी तब ससंघ वहीं विराज रहे थे) ब्र. भंवरीबाई ने आचार्य 108 श्री वीरसागर जी महाराज के कर-कमलों से स्त्री-पर्याय को धन्य करने वाली आर्यिका दीक्षा ग्रहण की। भगवान सुपार्श्वनाथ का कल्याणक दिवस होने से आपका नाम सुपार्श्वमती रखा गया। आचार्यश्री के हाथों से यह अन्तिम दीक्षा थी। आर्यिकारत्न की प्रवचन शैली ऐसी है कि श्रोता अभिभूत हुए बिना नहीं रह पाते थे। विशाल जनसमुदाय के समक्ष जिस निर्भीकता से आप आगम का क्रमबद्ध, धारा प्रवाह प्रतिपादन

परमपूज्य आर्यिका श्री जिनमती माताजी

वास्तव में गुरु का सानिध्य एवं वात्सल्य जीवन को मात्र सुवासित ही नहीं करता अपितु उसे परमपूज्य भी बना देता है।

यदि कल्याण की इच्छा है तो विषयों को विष के समान त्याग देना चाहिए। क्षमा, सरलता, दया, पवित्रता और सत्य को अमृत के समान ग्रहण करना चाहिए। इस तथ्य का बोध महाराष्ट्र प्रान्त की एक बाला को हुआ और वह आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के उपवन का एक सुरभित पुष्प बन गईं। कुमारी प्रभावती का जन्म विक्रम संवत. 1990 (सन् 1933) फाल्गुन शुक्ल. 15 के दिन म्हसवड़ (महाराष्ट्र) में हुआ था, इनके पिता का नाम श्री फूलचंद जैन एवं माता का नाम श्रीमती कस्तूरी देवी था। जैनधर्म के कर्मसिद्धान्तानुसार बालिका प्रभावती के दुर्भाग्य से पितृ एवं मातृ वियोग उन्हें बचपन में ही हो गया अतः उनका लालन-पालन मामाजी के घर पर हुआ था। सन् 1955 की बात है, उस समय पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, क्षु.वीरमती माताजी के रूप में थीं और चारित्र चक्रवर्ती आचार्यवर्य श्री शांतिसागर जी महाराज के सल्लेखना के समय आचार्य श्री के दर्शनार्थ क्षु. विशालमती माताजी के साथ दक्षिण भारत में विहार कर रही थीं, उन्होंने म्हसवड़ में चातुर्मास किया। उस चातुर्मास के मध्य अनेक बालिकाएँ पूज्य माताजी से कातंत्र व्याकरण, द्रव्य संग्रह, तत्त्वार्थसूत्र आदि ग्रंथों का अध्ययन कर रही थीं और उन्हीं बालिकाओं में वह 22 वर्षीया बालिका प्रभावती भी थी। माताजी ने उसके मनोभावों को जानकर अपने वात्सल्य के प्रभाव से प्रभावती को त्यागमार्ग के प्रति आकर्षित किया और सन् 1955 की दीपावली की पावन तिथि में वीरप्रभु के निर्वाणदिवस पर उन्हें आजीवन ब्रह्मचर्य एवं 10वीं प्रतिमा का व्रत दे दिया। वास्तव में गुरु का सानिध्य एवं वात्सल्य जीवन को मात्र सुवासित ही नहीं करता अपितु उसे परमपूज्य भी बना देता है।

जैन धर्म में है 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का संदेश

> धर्म के सिद्धांतों, सद् गुणों, स्वभावों तथा स्वकर्तव्यों का पालन करने से जीवन सदा विकसित होगा। जैन धर्म में महिलाओं को शिक्षित, संस्कारित करने पर सबसे ज्यादा बल दिया गया है।

जैन धर्म के सिद्धांतों को अंगीकार करने वाली महिलाएँ आज के युग में दुराचार से दूर रहकर चहुँमुखी प्रगति कर सकती हैं। धर्म के सिद्धांतों, सद् गुणों, स्वभावों तथा स्वकर्तव्यों का पालन करने से जीवन सदा विकसित होगा। जैन धर्म में महिलाओं को शिक्षित, संस्कारित करने पर सबसे ज्यादा बल दिया गया है।

महिलाएं बनें शिक्षित

आधुनिक युग प्रतिस्पर्धा का युग है। प्रत्येक नर-नारी अपने समुचित जीवन विकास के लिए भरसक प्रयत्न करते हैं। नारी भी कंधे-से-कंधे मिलाकर अपने जीवन-साथी की कामयाबी के लिए स्वयं नौकरी करती हैं। कई बार उन्हें अपना सफर अकेले भी तय करना होता है। इसलिए ऑफिस, बस अथवा सुनसान स्थानों पर महिलाओं के साथ हो रहे दुष्कर्मों से बचने के लिए उन्हें सचेत सावधान रहना चाहिए। उन्हें जैन धर्म की पगडंडी पर कदम रखते हुए मानवीय कुविचारों से सर्वदा दूर रहना चाहिए। प्रलोभन (लालच) के बहकावे में न आकर किसी पर पुरुष के प्रति आकृष्ट होने के कुविचारों पर संयमित होना चाहिए। जैन नारी को मानवीय मूल्यों को अपनाना चाहिए। महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा शिक्षित होने का प्रयास करना चाहिए। बालिकाओं को अपने शीलव्रत का दृष्टव्य देने के लिए सती अंजना, सती सोमा, सती सीता जैसी महान नारियों की मूर्ति को अपने मन मंदिर में बनाए रखना चाहिए। अपना दृष्टिकोण हमेशा सुंदर, मधुर तथा उपादेय रखकर जीवन को सत्यं, शिवं और सुंदरम् की ओर ले जाना चाहिए। नारी में मानवता, सहानुभूति और आंतरिक सौंदर्य होना चाहिए जिसके बल पर अनैतिक आचरण को होने से रोक सकती है। जैन धर्म श्रद्धा, विवेक की पतवार से जीवन सँवारकर निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होकर मानव जीवन कल्याणमय बनती है। यर्थाथ यह है कि नदी जैसे दोनों तटों के मध्य में संतुलित होकर प्रवाहमान रहने से ही अनेक प्राणियों के लिए, जीवनदायी बन सकता है। वैसे ही मनुष्य की जीवन सरिता तादात्मय और ताटस्थ इन दोनों तटों के मध्य रहकर जीवन वीणा की शब्द लहरियों से झंकृत हो जाती है।

जैन परिवारों में कन्या जन्म हर्ष का विषय है

कन्या जन्म पर दुख मनाने वाले परिवार अब जैनों में नहीं है। जैन परिवारों में तो कन्या जन्म पर हर्ष का विषय होता है। प्रत्येक नारी को अपना जीवन धर्म संस्कारों के साए में बिताना चाहिए जिससे स्वयं आत्मकल्याण के मार्ग पर चलकर दूसरों को भी राह दिखा सके। आज की बालिका, कल का भावी परिवार है अतः वे स्वयं धार्मिक सुरक्षित होकर अपने परिवार को दिशावान तथा संस्कारवान बनाकर संपूर्ण समाज, देश का नाम उन्नत करने में पूर्ण सफल होगी। भारत को नई ऊँचाइयों पर ले जाकर इसके गौरव को अक्षुण्णं रखेगी। इसके लिए उनका शिक्षित होना बहुत जरूरी है। वास्तव में जो महिलाएं सुशिक्षित हैं वे अपनी संतान को सुयोग्य साँचे में ढाल सकती हैं क्योंकि माताओं की गोद ही बच्चों के लिए प्रारंभिक पाठशाला है। माताएं बच्चों को प्रारंभ से ही लाड़ प्यार के साथ धर्म की घूंटी पिला-पिलाकर सुसंस्कारों से हृष्ट-पुष्ट बना सकती हैं। जब बच्चे कुछ समझने और बोलने लग जायें तब उन्हें महामंत्र सिखाना, अच्छे-अच्छे धार्मिक भजनों की पंक्तियाँ रटाना, जैसे-तैसे वे 3-4 वर्ष के होते जायें उन्हें छोटी-छोटी शिक्षास्पद कथाएं सुनाना, धार्मिक पाठशालाओं में कुछ न कुछ धर्म शिक्षा दिलाते रहना ही बच्चों को सुसंस्कारित करना है। किशोरावस्था में उन्हें कुसंगति से बचाना, मंदिरों में जाने की प्रेरणा देते रहना, गुरुओं के पास ले जाना, तीर्थयात्राओं की वंदना कराते रहना उनके जीवन में सद्विचारों के बीजारोपण करना है। खासकर ग्रीष्मावकाश में बालक-बालिकाओं को गुरुओं के पास धर्म शिक्षा दिलाना, धार्मिक पढ़ाई में शिक्षण शिविरों में भाग दिलाना, छुट्टी के दिनों का बहुत बड़ा सदुपयोग है। युवकों को धर्मकथाओं के माध्यम से चारित्रवान बनाना चाहिए।

आज भी चन्दनबाला अनंतमती जैसी कन्याएं हैं। सीता, मैना, मनोरमा जैसी पतिव्रता हैं, चेलना जैसी कर्तव्यपरायण हैं और ब्राह्मी-सुन्दरी के पदचिन्हों पर चलने वाली आर्यिकाएं हैं। हमारी बहनों को उनसे शिक्षा लेनी चाहिए। प्रतिवर्ष एक माह नहीं तो कम से कम एक सप्ताह उनके सानिध्य में जाकर उनसे कुछ सीखना चाहिए और स्त्री समाज में बढ़ती हुई दहेज प्रथा, सहशिक्षा आदि कुरीतियों को दूर करने में अपने समय को, शक्ति को और धन को लगाना चाहिए, यही महिलाओं का कर्तव्य है।

बेटी को संस्कारों को पोटली देना जरूरी

यदि कन्या शिक्षित है तो वह जिस घर में ब्याह कर जाती है उस घर को स्वर्ग बना देती है और अपने व्यवहार से दोनों कुलों की अर्थात् पीहर तथा ससुराल दोनों का नाम रोशन करती हैं। जब तक वह पिता के घर में है अपनी मां अथवा दादी के द्वारा दी गई संस्कारों की छुट्टी से बड़ो को आदर देने वाली एवं छोटों को प्यार देने वाली होती है। शिक्षित कन्या ही ससुराल में जाकर अपने सास-ससुर का आदर कर सकती है अपने पति की सहचरी बनकर उसके हर कदम पर उसका साथ देती है। अपने ससुराल वालों को साथ और पति को हिम्मत बांधने वाली होती है। आवश्यकता पढ़ने पर साहस का परिचय देकर परिवार का गौरव बढ़ाती है और इस तरह वह दोनों कुल की लाज निभाती है। बदलती हुई परिस्थितियों में, भौतिकतावादी संस्कृति के प्रति आकर्षण बढा है जिससे धर्म के स्थान पर धन का महत्व बढ़ा है इतना ही नहीं स्वतंत्रता के मायने बदले हैं तथा उच्छृंखलता के दृश्य समाज को शर्मिंदा कर रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते प्रभाव ने नारी सुलभ शालीनता को कठघरे में खड़ा कर दिया है। अनैतिकता के परिदृष्यों से समाज का विकृत स्वरूप सामने आ रहा है कहने का तात्पर्य यह कि जिस मर्यादित, सुसंस्कृत समाज की हमारे पूर्वजों ने कल्पना करके रीति नीति निर्धारण कर सामाजिक मानदण्ड स्थापित किये थे आज उन मानदण्डों की उपेक्षा ही नहीं बल्कि उन्हें रूढ़िवादिता कहकर नकारा जाने लगा है। परिवारों में बहू-बेटियों के बढ़ते अहंकार के चलते पारिवारिक प्रतिमान टूटते जा रहे हैं, स्वार्थ परता की भावना युवा पीढ़ी के हृदय में स्थान बनाने लगी है इस कारण उनकी नजरों में परिवार का महत्व घटने लगा है। बुजुर्गों की स्थिति दयनीय हो रही है। हमारा दायित्व है कि हम इस युवा पीढ़ी को उच्च शिक्षा के साथ मर्यादा और संस्कार का पाठ पढ़ायें परिवार, धर्म तथा जाति का महत्व समझायें, आज की बेटी कल का भविष्य है और यदि हमें अपना भविष्य सुरक्षित करना है तो अपनी बेटियों को दहेज के रूप में संस्कारों की पोटली थमाना होगी। तभी निम्न पंक्तियां सार्थक हो सकेगी।

जैन धर्म में लड़का और लड़की में कोई भेद नहीं

जैन धर्म में लड़का और लड़की में कोई भेद नहीं है। संसार की सृष्टि में स्त्री और पुरुष दो अंग हैं, जैसे-कुम्भकार के बिना चाक से बर्तन नहीं बन सकते अथवा कृषक के बिना पृथ्वी से धान्य की फसल नहीं हो सकती उसी प्रकार स्त्री पुरुष दोनों के संयोग के बिना सृष्टि की परंपरा नहीं चल सकती। आज जब घर में कन्या का जन्म होता है तब घर वाले ही क्या अड़ोस-पड़ोस के लोग भी यही सोचने लगते हैं कि यह क्या बला आ गई ? उसका मूल कारण है दहेज, इस दहेज प्रथा ने कितने अनर्थों को जन्म दिया है, सब प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। एक समय था जब कन्या को सबसे श्रेष्ठरत्न और उनके माता-पिता को सबसे श्रेष्ठ रत्नाकर माना जाता था। वास्तव में जहां एक कन्या के स्वयंवर के समय करोड़ों राजा महाराजा आकर उपस्थित होते थे और सबके मन में यही आशा रहती थी कि यह कन्या मेरे गले में वरमाला डाले। इस विषय में सुलोचना, सीता, द्रौपदी आदि के प्रत्यक्ष उदाहरण आबाल-गोपाल प्रसिद्ध ही हैं लेकिन आज सर्वथा उसके विपरीत स्थिति देखने को मिलती है। कन्याओं के जन्म को हीन दृष्टि से देखने का मूल कारण जो दहेज है, उसका कैसे निर्मूलन किया जाए ? इस पर महिलाओं को सक्रिय कदम उठाना चाहिए। महिलाएँ ही महापुरुषों की जननी हैं, तीर्थंकर जैसे नर रत्नों को भी जन्म देने का सौभाग्य महिलाओं ने ही प्राप्त किया है। यही कारण है कि महामुनियों ने भी उनकी प्रशंसा में बहुत कुछ कहा है।

धारावाहिक-5

20वीं सदी की चारित्र कथा

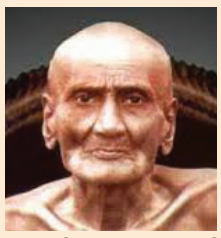

आचार्य शांति सागर जी

सातगौड़ा को अपना जीवनदाता मानते थे शूद्र

- सेवन, मिथ्या भाषण, शराब का त्याग
- 'सभी जीवों के प्रति दया और करुणा का भाव रखने का देते थे संदेश
- 'संस्कार देने के लिए पहले स्वयं उस पथ पर चलना जरूरी

लेखक
अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागर महाराज
(शिष्य आचार्य अनुभव सागर जी महाराज)

सातगौड़ा के पक्षी प्रेम के बारे में जानकर आपको निश्चित रूप से अच्छा लगा होगा। इस बार हम बात करेंगे उनकी मानवता के बारे में। सातगौड़ा को अस्पृश्य शूद्रों पर बड़ी दया आती है। उनके पडोसी गणू ज्योति दमाले मराठा के अनुसार, जब वह अपने खेत में फसल को पानी देते थे, तो उस समय कुछ शूद्र उसमें से पानी ले लेते थे। वह उन्हें न केवल डराते थे, बल्कि अपशब्द भी बोल देते थे। उनकी देखा-देखी बाकी लोग भी यही करते थे लेकिन तब सातगौड़ा उन्हें समझाते थे और कहते थे कि उन्हें पानी लेने दिया करो। सभी जीवों के प्रति दया और करुणा का भाव रखा करो। सातगौड़ा उन शूद्रों से कहते थे तो तुम चाहो तो उनके खेत से पानी ले लिया करो और अपना जीवन अच्छे से चलाओ। शूद्र उन्हें अपना जीवनदाता मानते थे। सातगौड़ा को जब शूद्र याद करते थे, उनकी आंखों से आंसू आ जाते थे। शूद्र कहते थे कि आज हमारे जीवन में जो भी अच्छी बातें हैं, वे सब सातगौड़ा(स्वामी) की देन हैं। शूद्रों ने सातगौड़ा के उपदेश और उनके प्रेम के कारण चोरी, कुशील सेवन, मिथ्या भाषण, शराब का त्याग कर दिया था। वे पराई स्त्रियों को मां-बहन की नजर से देखने लगे थे। उनके भीतर के ये सारे संस्कार सातगौड़ा की ही देन थे। वह हर बात उन्हें प्रेम और स्नेह से ही समझाते थे। तो आप सब श्रावक क्या समझे? दूसरों को प्रेम, करुणा, दया और वात्सल्य से।

काव्य मन

योनि नहीं है रे नारी !

सुमित्रा नंदन पंत

हाय, मानवी रही न नारी लज्जा से अवगुंठित,
वह नर की लालस प्रतिमा, शोभा सज्जा से निर्मित !
युग युग की वंदिनी, देह की कारा में निज सीमित,
वह अदृश्य अस्पृश्य विश्व को, गृह पशु सी ही जीवित !

सदाचार की सीमा उसके तन से है निर्धारित,
पूत योनि वहरू मूल्य चर्म पर केवल उसका अंकितय
अंग अंग उसका नर के वासना चिह्न से मुद्रित,
वह नर की छाया, इंगित संचालित, चिर पद लुंठित !

वह समाज की नहीं इकाई,--शून्य समान अनिश्चित,
उसका जीवन मान मान पर नर के है अवलंबित।
मुक्त हृदय वह स्नेह प्रणय कर सकती नहीं प्रदर्शित,
दृष्टि, स्पर्श संज्ञा से वह होजाती सहज कलंकित !

योनि नहीं है रे नारी, वह भी मानवी प्रतिष्ठित,
उसे पूर्ण स्वाधीन करो, वह रहे न नर पर अवसित।
द्वन्द्व क्षुधित मानव समाज पशु जग से भी है गर्हित,
नर नारी के सहज स्नेह से सूक्ष्म वृत्ति हों विकसित।

आज मनुज जग से मिट जाए कुत्सित, लिंग विभाजित
नारी नर की निखिल क्षुद्रता, आदिम मानों पर स्थित।
सामूहिक-जन-भाव-स्वास्थ्य से जीवन हो मर्यादित,
नर नारी की हृदय मुक्ति से मानवता हो संस्कृत।

जैन धर्म की पताका फहराती प्रमुख जैन नारियां

"आदिपुराण में कहा गया है कि 'कन्या रत्नात् परं नान्दय' अर्थात् कन्यारत्न से बढ़कर कोई रत्न नहीं है। नारी की महत्ता उसके नारीत्व गुणों से है। श्रेष्ठ महापुरूषों को जन्म देने वाली माता लोक में पूजनीय है।

डॉ. ज्योति जैन, खतौली

विश्व जननी 'नारी' सृष्टि के विकास का मूल आधार है। नारी परिवार समाज एवं राष्ट्र की धुरी है। नारी अपनी प्रकृति प्रदत्त विषेषताओं के कारण समाज को गतिशील बनाने में सक्षम है। जैन धर्म एवं संस्कृति में नारी का उच्च स्थान रहा है। वह तीर्थंकरों की जननी है। वह माता, पत्नी, बहिन, पुत्री के रूप में समाज में अपना सम्माननीय स्थान पाती है। जैन धर्म में धार्मिक आधार पर पुत्र-पुत्री में कोई भेदभाव नहीं है।

जैनधर्म एवं संस्कृति की यह परम्परा सतत रूप से चली आ रही है। महिला रत्न मगनबाई, कुकुंलाई, मां श्री चंदाबाई, पद्मश्री सुमतिबाई, कमला बाई, चिरौंजाबाई, बानुबाई, रमा रानी आदि अनेक नारियां जैन धर्म ध्वजा की पथगामिनी बनीं।

जैन पौराणिक ग्रंथों में नारियों की अनन्त महिमा का वर्णन किया गया है। आदिपुराण में कहा गया है कि 'कन्या रत्नात् परं नान्दय' कन्यारत्न से बढ़कर कोई रत्न नहीं है। नारी की महत्ता उसके नारीत्व गुणों से है। श्रेष्ठ महापुरुषों को जन्म देने वाली माता लोक में पूजनीय है। शीलवती स्त्रियों को देवों के द्वारा सम्मान प्राप्त है। प्राचीन शिलालेखों में नारियों की गौरवगाथा उत्कीर्ण है। जैन पुराणों और चरित्रों में जैन नारियों के अद्भुत पराक्रम, असीम सेवा, धर्म परायणता और त्याग संयम के कथानक चकित कर देते हैं।

आइये! देखें जैन धर्म ध्वजा को फहराती उन महान नारियों को जिन्होंने गृहस्थ जीवन का निर्वहन करते हुए धर्म एवं संस्कृति की रक्षा की।

- 'शीलवती सीता' का संपूर्ण जीवन सुख-दुख, साता असाता कर्मों के खेल में बीता। इस महान नारी ने दीक्षा ग्रहण की और धर्म की शरण लेकर नारी पर्याय को सफल बनाया।
- 'सती अंजना' ने अपने कर्मोदय में आये फलों को भोगा और पश्चाताप किया।
- 'राजुल' के चरित्र ने तो नारी जाति के त्याग की कथा रच दी, एक पल नहीं लगा और राग से वैराग्य पथ की ओर चल पड़ी।
- आर्यिका व्रत को धारण करने वाली 'द्रौपदी' क्षमा की प्रतिमूर्ति कहलायी।
- अपने पति को जिनधर्म में लगाने वाली 'रानी चेलना' आज नारी जाति में पति को सन्मार्ग पर लाने वाली अपना उदाहरण आप बन गयी।
- पति के दीक्षा लेने पर 'सुलोचना' ने भी आर्यिका पद धारण कर लिया।
- नगर के बंद दरवाजे को 'षीलवती मनोरमा' ने खोल जैन धर्म की जय जयकार करवाई।
- कर्मों से खेलने वाली संकल्प की धनी 'अनंतमति' ने दीक्षा लेकर नारी पर्याय को सफल बनाया।
- पति की सेवा एवं धर्म परायणता के माध्यम से अषुभ कर्म को शांत करती हुई 'मैना सुंदरी' आज भी नारियों की पथगामिनी बनी है।
- 'ब्राह्मी सुंदरी' ने बता दिया कि कैसे त्याग और संयम की साधना से जीवन सफल बनाया जा सकता है।
- समाज की विडम्बनाओं और परिस्थितियों से टकराने वाली 'चंदना' युगनायक भगवान महावीर की मुख्य अर्यिका बनी।
- 'सति सोया' ने ससुराल की प्रतिकूलता में भी देव शास्त्र गुरू के प्रति श्रद्धा रखकर अपने सभी संकटों को दूर किया।
- विपरीत परिस्थितियों में भी गजमोती चढ़ाने का नियम पालन करने वाली 'मनोवती' की धर्म प्रभावना अनुकरणीय है।
- अहिंसा की देवी 'अनंगशरा' ने जीव दया शांत भाव से मरण प्राप्त कर सद्गति पायी।
- 'रानी विशल्या' को मिली औषधीय शक्ति ने अनेक लोगों की पीड़ा दूर की।
- देव-शास्त्र गुरू के प्रति अटूट श्रद्धा रखने वाली 'रेवती रानी' अमूढ़ दृष्टि अंग में प्रसिद्ध हो गयी।
- 'सेठानी विजया' का ब्रह्मचर्य व्रत पालन गृहस्थों के लिए अनुपम उदाहरण बन गया।
- इनके अलावा शिवा देवी, मृगावती, वनमाला, दमयन्ती, गुणसुन्दरी, रानी उर्विला, कैकयी, मंदोदर, मदन रेखा, नीली बाई, प्रभावती, जम्बू कुमार की नवविवाहिता पत्नियां आदि अनेकानेक नारियां जैन धर्म संस्कृति की रक्षा में सदैव तत्वर रहीं।

दक्षिण भारत में महिलाओं का विशेष योगदान

दक्षिण भारत के गंगवंश एवं अन्य राज्य वंशों की महिलाओं ने जैन धर्म की प्रभावना और मंदिरों की व्यवस्थाओं में तन-मन-धन से सहयोग दिया। दक्षिण भारत की जो वैभवशाली परम्परा हम देख रहे हैं, उसमें महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान है। इन धार्मिक महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान है। इन धार्मिक महिलाओं ने न केवल अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन किया अपितु राज्य के संचालन, युद्धभूमि के मैदान एवं धर्म प्रभावना में महती भूमिका निभायी है। मां काललदेवी, अजिता देवी, सरस्वती, गुल्लिकाय जी, वीरांगना साावियव्वे, विदूषी पप्पादेवी, शान्तलादेवी, देवमति, आदि अनेक जैन नारियां अपने धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं साहित्यक उपलब्धियों के कारण इतिहास में अमर हो गयी।

नारी पर्याय को सार्थक बनाती हुई अनेका नारियां संयम-त्याग के मार्ग पर चलकर अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। समाधिस्थ आर्यिका विशुद्धमति माता जी, आर्यिका सुपार्श्वमति माताजी ने अपने संघ के साथ धर्म प्रभावना, साहित्य साधना एंव अनेक लोकल्याणकारी कार्य किए। गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माताजी, विशुद्धमति माताजी, गुरूमति माताजी दृढ़मति माताजी सहित देश में 37 गणिनी आर्यिका माताजी 527 आर्यिका माताजी, 174 क्षुल्लिका माताजी एवं अनेक ब्रहम्चारिणी बहनें संयम पथ पर चलती हुई नारी पर्याय को सफल बना रही हैं। धर्म की प्रभावना कर रही हैं।

उपरोक्त सभी आदर्शनारियों के कथानक आज की नारियों के पथप्रदर्शक के रूप में हैं। प्रायः ये सभी नारियां उच्चकुल की प्रतिष्ठावान, संस्कारों युक्त थी।

आजादी की लड़ाई में जैन महिलाओं का अवदान

आधुनिकीकरण, भूमंडलीकरण के बीच महिलाओं का बदलता मानस पटल आधी आबादी को जागरुक बना रहा है, गतिशील बना रहा है। भारतीय समाज एवं संस्कृति में पुरुष-नारी दोनों की भूमिका को कंधे से कंधा मिलाकर चलने जैसा माना गया है। भारतीय संविधान में भी स्त्री-पुरुष दोनों को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक अधिकार समान रूप से प्राप्त हैं। आज शिक्षा का बढ़ता दायरा, महिला संगठन एवं अधिकारों के प्रति चेतना से महिलाओं का आत्म विश्वास बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है।

जैन परंपरा में भी नारी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। धर्म कला, संस्कृति आदि में नारी को समान अधिकार प्राप्त हैं। जैन धर्म की इसी उदार भावना ने जहां नारी को पारिवारिक, सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाया, वहीं उसे आत्म कल्याण की और भी प्रेरित किया। भगवान आदिनाथ से लेकर भगवान महावीर तक और भगवान महावीर से लेकर आज तक जैन नारियों के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण की परंपरा विरासत से चली आ रही है।

हमारा देश एक लंबे समय तक पराधीन रहा और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष चलता रहा। आजादी के इतिहास और नवराष्ट्र के निर्माण की धारा में देश की महिलाओं के अवदान का सही-सही आकलन नहीं हो पाया है। जैन महिलाओं का मूल्यांकन तो न के बराबर है। प्रस्तुत लेख के माध्यम से उनके अवदान को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

इतिहास साक्षी है कि स्वाधीनता के इस महासमर में महिलाओं ने अपनी सामाजिक सीमा को ध्यान में रखते हुए पूरे जोशोखरोश के साथ कदम से कदम मिलाकर राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लिया। उस समय स्त्रियों का कार्यक्षेत्र घर की चारदीवारी तक सीमित था। फिर भी महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलनों में हिस्सा लिया। अंग्रेजों की दासता से मुक्ति पाने की इस लड़ाई में अनेक वीर महिलाएं सामने आईं जिन्होंने अपना सब कुछ अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई में समर्पित कर दिया। स्वतंत्रता की इस लड़ाई में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से उनके योगदान को समाज और देश कभी नहीं भूल पायेगा।

स्वाधीनता के समय में जब अनेक नारियों ने अपनी सक्रियता दिखाई तो जैन महिलाएं भी सामने आईं। यद्यपि यह वह समय था जब महिलाओं में विशेष जागृति नहीं थी। परंपरागत, रुढ़िवादी परिवारों में घूंघट आदि प्रथा के कारण घर से बाहर निकल कर काम करना ठीक नहीं समझा जाता था फिर भी जैन महिलाएं घर से बाहर निकलीं और आजादी के लड़ाई में सक्रिय बनीं। आजादी के दीवानों और क्रान्तिकारियों के परिवार तो अपने आप ही इस लड़ाई में शामिल हो गए थे। जैन महिलाएं अपने राष्ट्रप्रेम का परिचय देते हुए आंदोलनकारी गतिविधियों से जुड़ गयीं। घर-घर चरखे काते जाने लगे और खादी एवं स्वदेशी भावना का प्रचार हुआ। विदेशी कपड़ों की होलियां जलाई गयीं, शराब की दुकानों पर धरना दिया गया। महिलाओं के षिक्षित वर्ग ने लेख, गीत, भाषण आदि के माध्यम से आंदोलन की गति को बनाए रखा। महिलाओं की सक्रियता यहां तक हो गयी कि सभाएं, धरना, जुलूस आदि निकालना साथ ही लाठी, गोली खाकर जेल तक जाने का कार्यक्रम शुरू हो गया। इस तरह इन महिलाओं ने अपना सबकुछ देश के लिए न्योछावर करने की ठान ली। उनके जुझारू संघर्ष का चरित्र सदैव प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

आइये! भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में समर्पित उन जैन वीर महिलाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करें जिन्होंने सक्रियता से भारत मां को परतन्त्रता की बेड़ियों से आजाद कराया।

- आगरा की श्रीमती अंगूरी देवी जिन्होंने आजादी के आंदोलन में वह अलख जगायी कि आगरा नगर 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों से गूंज उठा। अपने पति महेन्द्र जैन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी। 1930 में एक सभा में भाषण करने के दौरान पुलिस ने गिरफ्तार कर इन्हें जेल भेज दिया। उस समय आप गर्भवती थीं। नमक सत्याग्रह के दौरान आप पुनः गिरफ्तार हुईं। 1932 के सत्याग्रह आन्दोलन में आपने अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम दिया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी सक्रिय भूमिका निभायी। उनका कहाना था कि अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को सहेजकर रखना प्रत्येक महिला का कर्तव्य है।
- 'अजमेर के प्रसिद्ध देशप्रेमी जीतमल लूणिया की धर्मपत्नी श्रीमती सरदार कुंवरबाई लूणिया राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के कारण अपने तीन वर्षीय पुत्र के साथ जेल में रहीं।
- 'मेरठ की श्रीमती कमला देवी को 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' में भाग लेने के कारण जेल की सजा भुगतनी पड़ी।
- 'कनपुर के प्रसिद्ध देशभक्त वैद्य कन्हैयाला जैन की धर्म पत्नी गंगाबाई जैन ने न केवल स्वदेशी का प्रचार किया अपितु साइमन कमीषन वापिस जाओ, दांडी यात्रा, नमक सत्याग्रह आदि आन्दोलनों द्वारा महिलाओं को जागृत किया एवं कारावास झेलना पड़ा।
- 'नागपुर की श्रीमती धनवती बाई रांका और उनकी देवरानी श्रीमती सरस्वती देवी रांका राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लेने के कारण अनेक बार जेल गयीं।
- '1942 के राष्ट्रव्यापी आंदोलन में अहमदाबाद की जयावती संघवी शहीद हो गयीं।
- 'प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी पं.परमेष्ठीदास जी की पत्नी श्रीमती कमला देवी को सभाबन्दी कानून भंग करने के कारण पांच महीने साबरमती जेल में रहना पड़ा।
- 'कानपुर की श्रीमती कमला सोहनराय ने राष्ट्रीय आन्दोलनों में समर्पित भाव से अपनी भूमिका निभायी एवं जेल यात्रा की।
- 'पूज्य बापू के आश्रम में रहने वाली कांचन जैन ने भी आंदोलन के दौरान कारावास की सजा भोगी।
- 'ललितपुर की श्रीमती केषरबाई ने तन-मन-धन से आंदोलन में भाग लिया।

Design By deesign STUDIO
deesignwork@gmail.com